

पोलीथीन बैग्स में रोपित करना चाहिए। थैलियों में पौधों को अधिक से अधिक एक वर्ष तक ही रखना उचित होता है, क्योंकि अधिक समय तक रखने पर पौधों की जड़ पोलीथीन से निकलकर जमीन की सतह पर चले जाने से पौधा सूखने का खतरा बढ़ जाता है।

बुआई का समय – बुआई हेतु उपयुक्त समय अप्रैल-मई के मध्य होता है। बुआई हेतु क्यारी का उपयोग किए जाने से जगह एवं मेहनत अधिक लगती है इसलिए प्रारंभिक अवस्था में क्यारी की जगह जर्मिनेशन ट्रे का उपयोग कर सकते हैं। यह ट्रे विभिन्न आकारों में (Sizes) उपलब्ध हो जाती है। अगर आप चाहे तो इसे स्वयं निर्मित कर सकते हैं। लोहे की चदार को चौकोर मोड़कर 4 सेमी. की दूरी पर निचले हिस्से में पूरी जगह छिद्र होना चाहिए ताकि पानी का रिसाव अधिक से अधिक मात्रा में हो सके एवं अकुरण हेतु पर्याप्त हवा एवं प्रकाश मिल सके।

रखरखाव/रोकथाम – जर्मिनेशन ट्रे से पोलीथीन में पौधे रोपित करने से पहले मिश्रण के साथ गेमक्सिन पाउडर का उपयोग दीमक रोकने के लिए आवश्यक होता है, साथ ही रोपित किए गए पौधे के चारों ओर इण्डोसल्फान का 1% का घोल डालना उचित रहता है जिससे दीमक का प्रकोप न हो सके। रोपित किए गए पौधों का रखरखाव कम से कम एक वर्ष तक करना आवश्यक होता है। रोपण के एक माह के अंतराल पर पौधों के चारों तरफ की

खरपतवार निकाल लेना चाहिए। जिससे पौधों की अधिक से अधिक बढ़त हो सके एवं अधिक राइजोम विकसित हो सके।

उपयोगिता – बांस की उपयोगिता ग्रामीण एवं कृषकों द्वारा घर बनाने, बैलगाड़ी बनाने, घरेलू कार्य हेतु उपयोगी सामग्री जैसे – टोकनी, झाड़ू, घरेलू साज-सज्जा एवं अगरबत्ती बनाने आदि में किया जाता है। यह कागज बनाने में सबसे अधिक उपयोगी रहा है। मानव जीवन में हिन्दू संस्कृति में बांस शादी विवाह, जन्म से लेकर मरण तक किसी न किसी रूप में मनुष्य का सहभागी रहता है।



सम्पर्क

डॉ. अर्चना शर्मा

वैज्ञानिक

बीज शाखा

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर (म.प्र.)

0761-2666529, 2665540

मूल्य रु. 10/-

बांस

(डेन्ड्रोकेलेमस स्ट्रिक्टस)



बहुपयोगी काष्ठ



बीज प्रभाग

राज्य वन अनुसंधान संस्थान

पोली पाथर, जबलपुर (म. प्र.)

प्रजाति का नाम – बांस

वानस्पतिक नाम – डेन्ड्रोक्लेमस स्ट्रिक्टस

प्रस्तावना – हमारे देश में 25 प्रतिशत शहरी एवं 75 प्रतिशत ग्रामीण आबादी निवास करती है ग्रामीण आबादी का एक बड़ा भाग अपनी रोजमर्रा की आवश्यक जरूरतों के लिए वनीकरण जैसे प्रमुख बांस, ईंधन, चारा कृषि हेतु तैयार किये गये औजार मकान के लिए छोटी-बड़ी इमारती लकड़ी तथा अन्य लघु वन उत्पादों के लिए शासकीय वनों पर निर्भर रहता है। भारत की बढ़ती आबादी तथा पशु संख्या में वृद्धि के कारण प्रदेश एवं देश के शासकीय वनों में दबाव बढ़ने से ग्रामवासी वनों की सीमाओं की ओर अग्रसर होते चले आ रहे हैं। अधिकांश ग्रामवासी बांस पर ही निर्भर रह कर जीवन व्यापन करते आ रहे हैं जिससे जन साधारण की आवश्यकता की पूर्ति भी हो रही है और ग्रामीण लाभान्वित भी हो रहे हैं। मध्यप्रदेश में साधारण बांस जिसे डेन्ड्रोक्लेमस स्ट्रिक्टस भी कहते हैं यह वन क्षेत्र सिवनी, बालाघाट, मंडला, जबलपुर, सीधी शहडोल, उमरिया, होशंगाबाद एवं झाबुआ जिलों में व्यापक मात्रा में पाया जाता है।

मृदा का प्रकार – दोमट रेतीली मिट्टी में अच्छी बढ़त देखी गई है।

बीज चक्र – 40 से 50 वर्षों में एक बार बांस के भिरो में फलन एवं फूलन होता है तत्पश्चात् उस क्षेत्र के समस्त भिरे नष्ट हो जाते हैं। अतः 40 से

50 वर्षों में एक बार ही एक क्षेत्र से बीज प्राप्त होने के कारण इसके रोपण एवं भंडारण पर अधिक ध्यान देना आवश्यक होता है।

पुष्पन का समय – सितम्बर से दिसम्बर माह में देखा गया है।

फलन समय – नवम्बर से मार्च माह में होता है।

बीज एकत्रीकरण समय – फरवरी से अप्रैल माह के मध्य बीज की परिपक्वता अनुसार किया जाना श्रेष्ठ होता है।

प्रतिकिलो बीजों की संख्या – 1 किलोग्राम बांस बीज में बीजों की संख्या 40,000 से 50,000 तक होती है।

जीवन क्षमता अवधि – बांस बीज की अंकुरण क्षमता मात्र 6 से 9 माह तक होती है प्रारंभिक 3 माह में अच्छा अंकुरण देखने को मिलता है तत्पश्चात् धीरे-धीरे अंकुरण प्रतिशत में कमी होती जाती है, क्योंकि बीज अधिक समय तक सामान्य भंडारण की स्थिति में जीवित नहीं रह सकता है।

अंकुरण प्रतिशत – संग्रहण पश्चात् तत्काल उपयोग किए गए ताजे बीजों में अंकुरण 60-70 प्रतिशत तक पाया जाता है।

सामान्य भंडारण की स्थिति में नीचे दर्शित विवरण अनुसार अंकुरण प्राप्त होता है।

प्रथम तीन माह में – 60-70 प्रतिशत

तीन से छः माह में – 30 से 40 प्रतिशत

छः से नौ माह में – 15 से 20 प्रतिशत

नौ से बारह माह में – 15 प्रतिशत से कम

पौध प्रतिशत – बीज में अंकुरण के पश्चात् 10 से 15 प्रतिशत तक पौध मृत प्रतिशत होने के कारण 50 से 55 प्रतिशत तक पौध प्राप्त होती है।

उपयुक्त भंडारण – साधारण भंडारण की अवस्था में जीवन क्षमता अवधि कम होने के कारण अंकुरण क्षमता शीघ्र कम होने लगती है। इस कारण बीज को विभिन्न परिस्थितियों में भंडारित कर अधिक से अधिक अंकुरण प्रतिशत लंबे समय तक प्राप्त करने के उद्देश्य से हुए अनुसंधान से ज्ञात परिणामों के आधार पर 10 डिग्री तापमान पर टिन कनटेनर में 2 वर्ष तक रखने पर 20 से 25% अंकुरण प्राप्त होता है। जो कि साधारण स्थिति में 9 माह में शून्य हो जाता है।

बुआई पूर्व उपचारण – अधिक से अधिक अंकुरण प्राप्त करने के उद्देश्य से बुआई पूर्व बीज को साधारण पानी में 24 घंटे भिगोकर रखना उपयुक्त होता है।

अंकुरण हेतु उपयुक्त माध्यम – अधिक अंकुरण प्राप्त करने के लिए बीज को रेत में 4 से 5 सेमी. की पतली परत बिछाकर बुआई करना चाहिए ताकि बीज को अंकुरण हेतु आवश्यक हवा, पानी एवं प्रकाश उपलब्ध हो सके। अंकुरण प्राप्त होने के पश्चात् पौध के 10 से 15 सेमी. लम्बाई होने की स्थिति में उसे एक भाग रेत + एक भाग मिट्टी + एक भाग गोबर खाद के मिश्रण के साथ रोपणी में